International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030
Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 3; Issue 2; March 2018; Page No. 211-213

नेहरु के बाद उपजी राजनीतिक शून्यता और लाल बहादुर शास्त्री

Dr. Preeti Tripathi
Assistant Professor, Dept. of Political Science, C.R.D. Women's PG College, Gorakhpur, Uttar Pradesh, India

प्रस्तावना

प्राचीन भारत के इतिहास में काशी (बनारस) का स्थान अद्वितीय है। बनारस एक पावन नगरी के रूप में विश्वविख्यात है, विश्वनाथ मंदिर, सारनाथ का बौद्ध मंदिर, पवित्र गंगा साधु–संतों का जमघट, अनेक शिक्षा संस्थाए, थिऑसॉफिकल सोसाइटी भारत की महान संस्कृति और गौरव की पहचान है। वेदज्ञ मनीषी स्वनामधन्य साहित्कारों का बाहुल्य सेवा प्रवण राजनीतिज्ञों की जन्मस्थली काशी नगरी की संतान थे स्वतन्त्र भारत के द्वितीय प्रधानमंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्री।

सत्यनिष्ठ, ईमानदार, व्यामोहयुक्त तपस्वी निष्काम कर्मयोगी श्री लाल बहादुर शास्त्री की जीवन गाथा एक साधारण मनुष्य की असाधारण गाथा है। भारतीय राजनीति में लाल बहादुर एक मील का पत्थर थे यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा शास्त्री जी ने यद्यपि कई महत्वपूर्ण राजनीतिक पदों पर कार्य किया किन्तु मार्च 1961 में पं0 गोविन्द बल्लभ पंत के निधन के बाद गृह मंत्री के पद पर शास्त्री जी की नियुक्ति को केन्द्रीय राजनीति में उनका दृढ़ प्रवेश माना जाता है। उत्तर प्रदेश, केन्द्र सरकार और कांग्रेस संगठन में विभिन्न स्तरों पर शास्त्री जी ने महत्वपूर्ण दायित्वों का निर्वहन किया और स्वाभाविक रूप से गृह मंत्री पद के लिए उनमें पर्याप्त योग्यताएं थी। लाल लाजपत राय के बाद श्री पुरूषोत्तम दास टंडन ने सर्वेण्ट आफ पीपुल्स सोसाइटी के अध्यक्ष का पद सम्भाला। इलाहाबाद में वे श्री टंडन के तपस्वी, निःस्वार्थी प्रबल चिंतन के सम्पर्क में आये। और नेहरू और टंडन जैसे दो विरोधी ध्रुवों के बीच सामंन्जस्य स्थापित किया।

27 मई 1964 को पं0 जवाहर लाल नेहरू के निधन के पश्चात् राष्ट्र के समक्ष एक महत्वपूर्ण प्रश्न उपस्थित हुआ नेतृत्व का स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् अब तक पं0 नेहरू देश के एकमात्र निर्विवाद नेता रहे थे, तथा प्रधानमंत्री के चुनाव की भी कोई प्रचलित विधि अस्तित्व में नही थीं। पं0 नेहरू ने अपने व्यक्तित्व एवं कृत्यों से इस पद को इतनी गरिमा प्रदान कर इसे गौरवशाली पद बना दिया था कि इस पद पर आसीन होने वाला व्यक्ति अब केवल केन्द्रीय सरकार का औपचारिक मात्र न रहता वरन् सम्पूर्ण जनमानस को उससे विशेष अपेक्षाएं थीं।

यद्यपि पं0 नेहरू के जीवन काल में भी यह प्रश्न उभरते थे कि नेहरू जी का उत्तराधिकारी कौन होगा? पत्रकार विन्सेन्ट द्वारा उठाए गए इस सवाल पर नेहरू जी ने उत्तर दिया– ''लोकतंत्रीय नेता भी क्या अपना वारिस युवराज तय करते है? क्या हम रोम के सम्राट है? मै जानता हूं कि लोकतंत्र की मामूली प्रक्रिया से ही मेरा उत्तराधिकारी चुन लिया जायेगा।''

''नेहरू का तर्क यह था कि जब गाँधी जी ने अपने राजनीतिक उत्तराधिकारी रूप मे उनका चुनाव किया तो वह आजादी की लड़ाई अनवरत रखने के लिए देश के नेता के रूप में अपना उत्तराधिकारी चुन रहे थे, न कि संसदीय दल का नेता या प्रधानमंत्री।''

उनका विचार था कि प्रधानमंत्री तय करने का पूरा–पूरा अधिकार कांग्रेस संसदीय दल को होगा। मै बने बनाए लोकतांत्रिक तरीके में परिवर्तन का अधिकारी नही हूँ।

1960 मे प्रकाशित हुई अपनी पुस्तक 'इण्डिया टुडे' में मशहूर पत्रकार फ्रैंक मोरेस ने इस विषय पर विस्तार से चर्चा की। तीन अग्रणय राजनैतिक नेताओं के नेहरू का उत्तराधिकारी चुने जाने की संभावना व्यक्त की– राजेन्द्र प्रसाद (भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति गोविन्द बल्लभ पंत (गृह मंत्री) मोरारजी देसाई (वित्त मंत्री) किन्तु इन तीनों नेताओं पर आम सहमति बन पाने में आशंका थी..... मोरेस ने मानो एक भविष्यवाणी की –

''इसलिए नेहरू के उत्तराधिकारी के अपेक्षाकृत एक अनपेक्षित व्यक्ति के उभरने की संभावना है जो है पचपन वर्षीय वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री श्री लाल बहादुर शास्त्र है। शास्त्री जी खुद भी नेहरू जी की तरह उत्तर प्रदेश के निवासी है और राजनीतिक तथा निजी हैसियत में नेहरू के बहुत करीब है। नेहरू की तरह यद्यपि वह आकर्षक व्यक्तित्व के धनी नही है फिर भी प्रधानमंत्री पद के लिए आम सहमति की दृष्टि से वही सर्वोत्तम उम्मीदवार हो सकते है– खासकर तब जब इन तीनो में से कोई राष्ट्रपति के रूप में और अधिक निश्चयात्मक राजनैतिक भूमिका अदा करना चाहे।

नेहरू जी के हटने के बाद यदि दक्षिण–मार्गियो का नियंत्रण पार्टी पर हो गया तो सम्भवतः प्रसाद, पंत, मोरारजी का गुट प्रभावशाली बनेगा और स0 क0 पाटिल और डॉ0 सत्य नारायण सिन्हा भी इसमें शामिल हो सकते है। लाल बहादुर शास्त्री अपने वाम मार्ग के रूझान के बावजूद इस गुट के साथ मिलकर काम करने की क्षमता रखते है।

मोरेस ने तब यह कल्पना भी नही की होगी कि उनकी भविष्यवाणी एकदम सच साबित होगी।

वेल्स हैगेन की पुस्तक ''नेहरू के बाद कौन''? (1963) में भी इस विषय में कुशलता से विश्लेषण किया गया था। उन्होने 8 सम्भावित उत्तराधिकारियों का उल्लेख किया था–– मोरारजी देसाई, कृष्ण मेनन, लाल बहादुर शास्त्री, यशवंत राव चव्हाण, इंदिरा गाँधी, जय प्रकाश नारायण, स0 का0 पाटिल और बृजमोहन कौल। इन सबका एक–एक करके विश्लेषण करने के बाद हैगेन ने निष्कर्ष निकाला कि लाल बहादुर शास्त्री के इस पद पर आने की संभावना सबसे अधिक है।

''इस किताब में वर्णित सभी व्यक्तियों में शास्त्री योग्यतम् भारतीय है। भारत के विचारों से, तथा भारत की मिट्टी के साथ वे एकाकार है। भारत के ग्रामीण नागरिक की क्षमताओं तथा दुर्बलताओं के वे प्रतीक है। वे अगर इतिहास में स्वतन्त्र भारत के द्वितीय प्रधानमंत्री के रूप में अपनी जगह बनाने वाले है तो ऐसा उन्हे पक्ष के वरिष्ठ नेताओं की सम्मति से करना होगा, जिसमे जाहिर है नेहरू भी शामिल होगें।''

अपने चारो ओर नेहरू जी को बढ़िया आदमी दिखे जो अपने आप

में श्रेष्ठ थे तथा चरित्र एवं निष्ठा की दृष्टि से महान थे लेकिन मेधा और प्रतिभा की दृष्टि से औसत दर्जे के थे। वे नेहरू के स्वप्निल समाजवादी ढ़ाचे और विवेकपूर्ण अन्तर्राष्ट्रीयता के विषय में जिसके नेहरू उपदेशक थे उदासीन थे।

1 जनवरी 1964 को भुवनेश्वर में नेहरू जी को दिल का दौरा पड़ने पर नेहरू मन्त्रिमण्डल मे शास्त्री जी का निर्विभागीय मंत्री के रूप में वापस आना इस दिशा की ओर पहला कदम माना गया। विख्यात अंग्रेजी दैनिक समाचार–पत्र 'द गार्डियन' ने (24 जनवरी 1964) – शास्त्री जी की नियुक्ति का स्वागत किया।

''ऐसा लगता है कि शास्त्री जी को आगे प्रधानमंत्री पद के लिए तैयार किया जा रहा है। जो मंत्रिमण्डल उन्होने कामराज–योजना के कारण छोड़ दिया था उसमें वे वापस आ रहे हैं। यह खबर दो कारणों से स्वागत योग्य है– एक उत्तराधिकारी के प्रश्न पर विचार होने लगा है और दूसरे इस सन्दर्भ में शास्त्री का नाम ही सामने है।''

नेहरू युग का अन्त

27 मई 1964 को भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं0 नेहरू का स्वर्गवास हो गया। इस संकट की घड़ी मे यह भारत के लिए बड़े ही सौभाग्य की बात थी कि ऐसे समय पर एक बहुत ही कुशल एवं निष्ठावान व्यक्ति कांग्रेस के अध्यक्ष पद पर आसीन थे कुमार स्वामी कामराज नादर श्री नादर ने मद्रास के मुख्यमंत्री के रूप में राष्ट्रीय स्तर की ख्याति अर्जित की थी, और 1963 में अपनी ही योजना के कारण पद का परित्याग कर दिया। उन्होने (जनवरी 1964) की भुवनेश्वर कांग्रेस अधिवेशन की कुशलता के साथ अध्यक्षता की थी। कामराज वैचारिक दृढ़ता एवं स्पष्टता के लिए विख्यात थे। पं0 नेहरू के निधन के पश्चात् उन्होने नये नेता के सर्वसम्मति से चुनाव की सरगर्मी तेज कर दी।

केन्द्रीय हाल में अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में उन्होने याद दिलाया कि आज पूरे विश्व की आंखे दिल्ली की ओर लगी हुई है। अब हमे विश्वास पूर्ण संयत तथा व्यवस्थित ढंग से नेहरू का उत्तराधिकारी निर्वाचित करना है। उन्होने आग्रह किया कि सदस्यगण परिस्थित के अनुरूप गम्भीरता का परिचय दें। इधर नये नेता का चुनाव होने तक प्रधानमंत्री का पद रिक्त नही रखा जा सकता था अतः वरिष्ठतम् नेता श्री गुलजारी लाल नंदा को कार्यवाही प्रधानमंत्री नियुक्त कर दिया गया।

पार्टी के कुछ वामपंथी लोगों का विचार था कि यह चुनाव अंशकालिक रूप से स्थगित कर दिया जाए क्योंकि अभी लोग नेहरू जी की पीड़ा से उबर नही पाएं है और इतना महत्वपूर्ण निर्णय लेने की स्थिति में नही है। किन्तु कामराज इस बात से सहमत नही थे। 28 मई को दिल्ली में विभिन्न पक्षों के बीच अनौपचारिक बातचीत हुई। 29 मई को सीधा मुकाबला टालने के महत्वपूर्ण प्रयास हुए। कांग्रेस अध्यक्ष ने पार्टी के वरिष्ठ नेताओं के साथ कई चरणों में बातचीत की जिनमे लाल बहादुर शास्त्री, गुलजारी लाल नन्दा, टी0टी0 कृष्णमाचारी, मोरारजी देसाई, जगजीवन राम, यशवंत राव चव्हाण तथा कुछ मुख्यमंत्री सम्मिलित थे।

इस चुनाव के लिए कुछ उम्मीदवारों का काफी प्रचार किया गया किन्तु विशेष रूप से दो प्रमुख नाम उभर कर आए– मोरारजी और लाल बहादुर शास्त्री। 30 मई को कांग्रेस कार्यकारिणी समिति की बैठक हुई जिसमें नेहरू जी के निधन पर शोक प्रस्ताव पारित किया गया और दूसरे दिन कांग्रेस संसदीय पार्टी के नए चुनाव की तारीख तय होनी थी। उसी दिन अनुसूचित एवं पिछड़ी जाति के 18 सदस्यों ने जगजीवन राम के पक्ष में अपना निर्णय लिया वही दूसरी ओर मोरारजी ने सर्वसम्मति से चुनाव के पक्ष में अपना समर्थन देते हुए अपने नाम पर कामराज से चर्चा की।

इधर शास्त्री जी इंदिरा जी से मिले और बागडोर अपने हाथों में लेने की बात की किन्तु इंदिरा जी ने अपनी मनादेशा का हवाला देते हुए स्पष्ट मना कर दिया। 2 जून 1964 को नया नेता चुनने की तिथि निश्चित हो गई साथ ही कार्यकारिणी समिति के सभी सदस्यों ने इस बात पर कामराज के निर्णय का सर्वसम्मति से समर्थन करने का बात कही उनका निर्णय अन्तिम होगा कोई संघर्ष नही होगा।

यद्यपि पर्दे की पीछे की सरगर्मी तेज थी दक्षिण एवं मध्यमार्गी तथा वाममार्गी कार्यकर्ता अपने–अपने गुट के उम्मीदवार के लिए समर्थन जुटाने में लगे हुए थे किन्तु बड़ी ही शिष्टता और पार्टी अनुशासन में यह सब चल रहा था।

किन्तु अन्त में लाल बहादुर शास्त्री और मोरारजी का नाम ही शेष रह गया। लेकिन 31 मई की शाम तक जो चित्र उभरा उसके अनुसार संसद सदस्य मुख्यमंत्री तथा कांग्रेस कार्यकारिणी समिति के अन्तर्गत सबसे अधिक मत शास्त्री जी के पक्ष में थे।

इस कार्य को पूर्ण करने का श्रेय कामराज को जाता है। 2 जून को शास्त्री जी का कांग्रेस संसदीय दल के नेता के लिए चुनाव और प्रधानमंत्री पद पर नियुक्ति निश्चित हो गई। 2 जून 1964 को भारत ने पूरे विश्व के सामने अपने राजनीति कौशल का प्रदर्शन किया। कामराज के भाषण के बाद कार्यवाहक प्रधानमंत्री गुलज़ारी लाल नन्दा ने औपचारिक रीति से कांग्रेस संसदीय दल के नेता और इस प्रकार देश के प्रधानमंत्री पद के लिए लाल बहादुर शास्त्री का नाम प्रस्तावित किया। और शास्त्री जी का चुनाव सर्वसम्मति से हो गया।

यहाँ यह कहना अतिशयोक्ति नही होगा कि लाल बहादुर शास्त्री जैसा कर्मठ योग्य व्यक्ति ही पं0 नेहरू का उचित उत्तराधिकारी हो सकता है। पूर्णतः निर्विवाद और असाधारण क्षमतावान शास्त्री जी अपने कुशल नेतृत्व से देश को सम्भालने का अदम्य साहस रखते थे। भारतीय जनमानस एवं कांग्रेस संगठन ने मुक्त हृदय से अपने नये प्रधानमंत्री का स्वागत् किया।

अपने भाषण मे शास्त्री जी कहाँ – ''मेरी इच्छा तथा आकांक्षा है कि हम सब मिलकर काम करें। मुझे विश्वास है कि हमारे देशवासी आए हुए संकट का सामना काबिलियत के साथ करेगें क्योंकि जनता में मेरा पूरा विश्वास है। हमने पहले भी मुश्किले देखीं है हो सकता है हम असफल हो जाए – पर जनता कभी असफल नही होती।

पं0 नेहरू ने एकबार कहा था – ''हमारी प्रजातंत्रीय व्यवस्था में किसी भी तरह तानाशाही प्रवृत्ति को न आने देना महत्वपूर्ण बात है।'' और सारे देश ने यह सिद्ध कर दिया लाल बहादुर शास्त्री ही देश को सर्वश्रेष्ठ तरीके से चला सकतें है।

यह कर्मपथ का पुजारी सर्वोत्कृष्ट गाँधीवादी देश सेवा का संकल्प लेकर अपने मार्ग पर बढ़ चला।

सन्दर्भ

1. श्रीवास्तव सी0पी0 – राजनीति में सत्यनिष्ठ जीवन मोतीलाल बनारसी दास पब्लिशर्स प्राइवेट लिमिटेड दिल्ली, 2000
2. हैगन वेल्स – आफ्टर नेहरू हूँ? रूपर्ट हार्ट डेविंस लंदन 1963
3. शास्त्री सुनील – मेरे बावूजी, पूर्वोदय प्रकाशन, दिल्ली 1988
4. मानकेकर डी0 आर0 – आधुनिक भारत के निर्माता, लाल बहादुर शास्त्री। प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार, 1996
5. सिंह एल0 पी0 – सर्वोत्कृष्ट गाँधीवादी लाल बहादुर शास्त्री

वाणी प्रकाशन नयी दिल्ली, 2000
6. धरती का लाल – श्री लाल बहादुर शास्त्री सेवा निकेतन फतेहपुर (लाल बहादुर शास्त्री शाखा–1, मोतीलाल नेहरू प्लेस नई दिल्ली, 1986 स्मृति ग्रन्थ)
7. मिश्र भगवती शरण – भारत के प्रधानमंत्री, राजपाल एण्ड सन्स कश्मीरी गेट दिल्ली–2006
8. जसरा एम0 एस0 – लाल बहादुर शास्त्री अविस्मरणीय जीवन प्रसंग प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार, 2005
9. सिंह गोविन्द – जय जवान, जय किसान, लाल बहादुर शास्त्री न्यू साधना पाकेट बुक्स रोशन आरा रोड, दिल्ली, 2008
10. सेलेक्टेड स्पीचेज – प्रकाशन विभाग सूचना औ प्रसारण मंत्रालय भारत आफ लाल बहादुर सरकार, नई दिल्ली, 1974 शास्त्री (11 जून 1964 से 10 जनवरी 1966 तक)